M.A-III SEMESTER CC- PAPER-12

अपभ्रंश प्राकृत साहित्य

पाहुड दोहा

(1.) पाहुड दोहा में कवि मुनिरामसिंह संक्षिप्त विवेचन करें।

Ansr— प्रस्तुत पाहुड दोहा में कवि मुनिराम सिंह विरचित पाहुड दोहा के मंगला-चरण से ली गई है। मुनिराम सिंह राजस्थान के निवासी थे, पहले सैवधर्मों के अनुयायी थे कदमें जैन सम्प्रदाय हो गये। इन कि रचना योयुन्दु के सदृश्य के दिये गये उपदेशात्मक दोहे के रूप में आत्मध्यायन सुख की प्रवृत्ती को सर्वोत्तम मानते हुए मोदग्त आमिलाबित व्यक्तियों को अंधविश्वास में भटकने से वंचित करने में भरपुर प्रयास किये है। इनके पद हकहु जोयुन्दु के सदृश्य दृष्टि गोचर होते है इनकी रचना 1000 ई० के आस-पास मानी गयी है सुख दो प्रकार का होता है भौतिक अध्यात्ममिक सुख। क्षणभंगुर होता है परन्तु चिरस्थायी उसे सच्चा सुख कहलाता है। उन्होंने मुनियों को निर्देश देते हुए मुक्त प्राप्ति हेतु, इस काव्य की रचना की है।

गाथा - 01 पहला - प्रस्तुत गाथा में स्वआत्मा और परआत्मा के भेद को दर्शाते हुए कवि ने कहा है कि जो दिनकर अर्थात सूर्य महान है वे गुरु है वे हिमकरण अर्थात चन्द्रमा भी महान है। अर्थात वे भी गुरु है और प्रज्वलित दिपाशिखा भी महान है अर्थात वे गुरु है सभी देव महान अर्थात वे भी गुरु है। कहने का अभिप्राय: यह है ये सभी प्रकार देनेवाले है दूसरों के भलाई में

दिनरात अनवरत रूप में प्रयत्नशील है।
इन सबको उपकार की भावना व्याप्त है, तथा
स्व आत्मा पर आत्मा के आकर भेद को जानते
हुए आत्म सदैव प्रकाश देते है। जिससे
यह जगत संचालित होता है, उसमें जीव
समायक रूप से अपने कर्मों में लगे रहते
है। जिस मनुष्य में चेतना नहीं है।
वह एक पशु के समान है जिसमें
चेतन जाग गया वह मनुष्य का स्व
रूप जीव है। जीव को हमेशा अच्छा
कर्म करना चाहिए जिस प्रकार मुनि
रामसिंह ने पाहुड़ दोहे में प्रस्तुत किया है कि
सूर्य, चन्द्रमा, हिमालय पर्वत नदी सभी
दूसरे की भलाई के लिए ही दिन-रात
प्रयत्नशील है उसी प्रकार मनुष्य को भी
सभी प्राणी के लिए भलाई का मार्ग
अपना कर दूसरे जीव जन्तु का भी
भलाई करना चाहिए। (
आर्थित ये सभी दिनकर
चन्द्रमा, दीप के देव के समान उजले हैं।
अतः निष्कर्ष - निकलता है कि मनुष्यों को
अच्छा कर्म कर, दूसरे की भलाई करना
चाहिए।